The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भुंजिया जनजाति के प्रमुख देवी-देवता तथा त्यौहारों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 सफक्कत अली

अतिथि व्याख्याता समाजशास्त्र, शासकीय नवीन महाविद्यालय पेंड्रावन जिला दुर्ग

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15857808

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

लौकिक जगत, अलौकिक शक्ति, अराधना तथा पूजा

ABSTRACT

धर्म एक सामाजिक संस्था है, जो कि लौकिक जगत की व्याख्या अलौकिकता के परिपेक्ष्य में करती है तथा उस अलौकिक शक्ति से मानव का क्या संबंध है इसकी जानकारी देती है। इस अलौकिक शक्ति से संबंधित विश्वासों और क्रियाओं को ही धर्म की संज्ञा दी गयी है। प्रत्येक संस्कृति में धर्म को एक सामाजिक रुप दिया गया है। भारत की अधिकतर जनजातियों में यह विश्वास है कि मृत्यु पश्चात् जीवन समाप्त नहीं होता है तथा वह किसी न किसी रुप में विद्यमान रहता है। पूर्वजों की आत्माओं की अराधना तथा पूजा, इसी विश्वास का प्रतिफल है। पूर्वजों की आत्मायें रोगों में दुष्टात्माओं को दूर-भगाने में सहायता करती है। जनजातियों में यह भी मान्यता है कि आत्मायें निकट संबंधियों से संपर्क बनाये रखती है। विशेष समारोहों में वे पूर्वजों की आत्माओं का आहवान इसलिए करते है, ताकि उनके परिवारों में सुख शांति बना रहे। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से भुंजिया जनजाति के विभिन्न देवी-देवता, त्यौहारों इत्यादि को जानने का प्रयास किया जायेगा।

प्रस्तावना:-

संसार के सभी धर्मों में ईश्वर को महत् अदृश्य शक्ति माना गया है- ये शक्ति सदैव ही अदृश्य व अज्ञात रहती है। इनके प्रति अलग-अलग मान्यतायें तथा कल्पनायें करना स्वभाविक ही है। प्रत्येक धर्म का आधार इसी शक्ति पर विश्वास है तथा यह शक्ति मानव शक्ति से निश्चित ही श्रेष्ठ है। **(Guha, 1993, p. 100)** **(Singh, 2009)** ने बताया कि आदिवासी समाज में धर्म की प्रकार्यात्मक भूमिका रही है। धर्म का कोई न कोई स्वरुप प्रत्येक जनजातीय

समाज में पाया जाता है। समस्त सरल समाजों में लोगों का विश्वास है कि प्राकृतिक क्रियाओं और मानव प्रयत्नों की सफलता ऐसी सत्ता के नियंत्रण में है, जो दैनिक अनुभूति से परे है। आदिवासी भारत में विद्यमान घटनाक्रम बदल सकता है। आदिवासी भारत में विद्यमान परामानवी एवं पारलौकिक शक्तियों से संबंधित धार्मिक एवं लोक विश्वास के विभिन्न रुप दिखलायी पड़ते है। जीवात्मावाद, जीववाद, आत्मावस्तु तथा बहुदेववाद आदि धार्मिक विश्वास के महत्वपूर्ण तत्व प्रायः प्रत्येक आदिवासी समाज में दृष्टिगोचर होते है। **(Hoebel, 1949, p. 305)** के अनुसार मानव संस्कृति में धर्म का अपना विशेष स्थान है, इसके द्वारा समाज के नैतिकता के पवित्र मापडंडों का विकास होता है। धर्म सामाजिक नियंत्रण का एक प्रमुख अभिकरण है। **(Majumdar, 1961, p. 423)** ने जनजाति धर्म के बारे में उल्लेख किया है कि धर्म किसी भय की वस्तु अथवा शक्ति का मानवीय प्रतियुत्तर है, जो कि अलौकिक एवं अतिन्द्रीय है। यह व्यवहार की अभिव्यक्ति तथा अनुकुलन का वह प्रकार है जो की लोगों की अलौकिक शक्ति की अवधारणा से प्रभावित है। **(Ghurye, 1963, p. 20)** के अनुसार जनजातीय धर्म वस्तुतः हिन्दु धर्म का अविकसित रुप है।

प्रत्येक जनजाति समाज में देवी-देवताओं का विशेष महत्व होता है, जिनकी वे समय-समय पर पूजा-अराधना करते है। उनका रुष्ठ होना किसी भयंकर विपत्ति को जन्म देने के बराबर होता है। अतः प्रत्येक जनजाति समाज में इनका विशेष ध्यान रखा जाता है। **(Alvin, 1955, p. 95)** ने उड़ीसा की सांवरा जनजाति के 185 देवी-देवताओं के नामों की सूची बनायी थी। उन्होनें यह भी स्पष्ट किया था कि प्रायः हर विशेष कार्य से संबंधित देवी-देवता प्रत्येक जनजाति में पाये जाते है। **(Dubey, 1990, pp. 79-81)** ने ग्राम की रक्षा के लिए ग्राम्यदेवी, रोगो से रक्षा करने वाली मौसम्मा देवी का उल्लेख अपने भारतीय गांव के अध्ययन में किया है। **(Tiwari, 2001, p. 60)** ने अपने अध्ययन में बताया कि भारिया जनजाति के प्रमुख देवता बुढ़ादेव, दुल्हादेव या बरुआ और नाग होते है। भारिया जाति बाघेश्वर देवता को भी इस विश्वास के साथ पूजते है कि भारिया को बाघ नहीं खाता। बड़ादेव या बूड़ादेव भारियाओं का ग्राम देवता है। बड़े देव ग्राम की रक्षा करने वाले देवता है। वर्ष में चैत्र, क्ंवार माह में पूजा करते है, पूजा में नारियल, दारु, मुर्गी, बकरा बलि के रुप चढ़ाया जाता है इसके साथ-साथ स्थानीय देवियों पर भी भारिया बहुत विश्वास रखते है। ऐसी देवियों में जगतार माई, भवानी माई, नगबेड़नी माई, खेड़ापति माई, बनजारिन माई, रात माई आदि है। खेर माई बाहरी बाधाओं को रोकती है। गुरुमाता देवी, काली दुर्गा, पनघट माई, मातादाई, झिरिया माता, शक्ति माई, बघात माई आदि की भी पूजा करते है। संकट के समय किसी भी माई कर स्मरण भारियाओं के स्वभाव में है। जिस प्रकार उपरोक्त अध्ययनों मेंे विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं के बारे में अध्ययन किया गया है उसी प्रकार अध्ययनगत भुंजिया जनजाति में किन-किन देवी देवताओं की पूजा-अर्चना की जाती है, उनका निवास स्थान, पूजा करने की तिथि, बलि, तथा विशेष मान्यता इत्यादि इस प्रकार है।

भुंजिया जनजाति के देवी-देवता

1 बुढ़ा देव:- इनका निवास स्थान ग्राम के बीच चबूतरें पर होता है प्रत्येक मांगलिक कार्य एवं जाति पंचायत बैठक प्रारंभ करने से पूर्व इनकी पूजा अर्चना की जाती है, इन्हें शांति एवं समृद्धि प्रदान करने वाले देवता तथा ग्राम रक्षक देवता के रुप में माना जाता है।

2 ठाकुर देव:- इनका निवास स्थान ग्राम के सीमा पर होता है, चैत्र व बैशाख माह में विशेष पूजा बैगा द्वारा समपन्न किया जाता है इनके पूजा अवसर पर मुख्यतः मुर्गा/मुर्गी, बकरें की बलि दी जाती है यह ग्राम को बाहरी अनिष्ठ कार्य, शक्तियों से सुरक्षित रखते है, ग्राम सीमा पर पत्थर एवं मिट्टी का बैल रखा जाता है।

3 मचकुल पाट:- इनका निवास स्थान ग्राम के सीमा के बाहर बैशाख माह में इनकी विशेष पूजा की जाती है इनके पूजा के अवसर पर मुर्गा/मुर्गी, बकरें की बलि दी जाती है इस देवता के प्रति इनकी विशेष मान्यता है कि बलि दिये गये जानवर के रक्त को मिलाकर खेंतों में बोने पर अत्यधिक फसल उत्पादन होने की संभावना होती है, इस पूजा में स्त्रियों का जाना वर्जित तथा बलि में पशुओं के मांस जिसे प्रसाद रुप में ग्रहण किया जाता है उसे स्त्रियों द्वारा खाना भी प्रतिबंधित होता है।

4 गुड़ेनदेवता:- भुंजिया जनजाति में इस देवता की स्थापना गुड़ी (घर) बनाकर किया जाता है भुंजिया जनजाति में यह देवता ठाकुर-देवता के समान है, इनमें भी मुर्गा/मुर्गी की बलि देने की प्रथा है इस पूजा में भी स्त्रियों का शामिल होना वर्जित होता है।

5 डूमरदेव:- इनका निवास स्थान डूमर के पेड़ पर माना जाता है, आखेट (शिकार) पर जाने से पूर्व डूमर देवता से मन्नत मांगी जाती है।

6 पाटसाधू:- इन्हें भुंजिया जनजाति के पूर्वज पूरुष के रुप में माना जाता है।

7 नागदेवता:- इस अवसर पर नागदेवता की पूजा का विशेष महत्व होता है नागपंचमी के दिन मनाया जाता है, इस दिन नाग के निवास स्थान पर दूध चढ़ाया जाता है।

8 दंतेश्वरी देवी:- दंतेश्वरी देवी की पूजा के लिए मंदिर का निर्माण किया जाता है, आषाढ़ माह में इनकी पूजा अर्चना की जाती है, यह भंुजिया जनजाति की ग्राम देवी है जिसकी पूजा में बारह गांव शामिल होते है, इसका संबंध बस्तर की दंतेश्वरी देवी से माना गया है।

9 कुलेश्वरी देवी:- इस देवी की पूजा कुंवार नवरात्र होती है इसमें मुर्गा/मुर्गी, बकरा की बलि देने की प्रथा है, यह भुंजिया जनजाति की प्रिय देवी है जिसका संबंध राजिम के कुलेश्वर मंदिर से माना गया है।

10 मातेसीरी:- इस देवी की पूजा माघ व आषाढ़ में होती है, इसमें मुर्गा/मुर्गी, बकरा की बलि देने की प्रथा है, इनकी पूजा मे बैगा के द्वारा पूजा किया जाता है तथा ग्राम की खुशहाली की मन्नत मांगी जाती है।

11 शीतला माता:- गांव के माता गुड़ी में इनका निवास स्थान होता है, चैत्र माह में शीतला माता की विशेष पूजा की जाती है इसे ग्राम रक्षिका देवी माना जाता है, इनकी पूजा के पश्चात् अनेक बीमारी खुजली, बुखार, दस्त इत्यादि से छुटकारा मिलता है।

12 खम्भेशरीन:- इनका निवास स्थान खम्भा/डांग पर होता है इनकी पूजा बाजार, मड़ई, दशहरा के त्यौहार में की जाती है, इनकी पूजा पश्चात् त्यौहार एवं मड़ई उत्सव के अच्छे होने की कामना करना की जाती है।

13 छोटी बूढ़ी नियाली मली:- इनका निवास स्थान ग्राम के प्रवेश द्वार पर होता है। इनकी पूजा वर्ष में तीन बार नवाखाई, दशहरा, रक्षाबंधन में की जाती है। जिसमें गांव के अन्य लोग भी शामिल होते है, इसमें किसी पशु की बलि नहीं दी जाती है।

14 कांटेझुलिन:- इनकी पूजा वर्ष में एक बार होती है, ये कांटो से बने झूलों में निवास करती है, ऐसी मान्यता है कि इनके नाराज होने से पशु एवं बच्चें का बीमार होने लगते है इनके पूजा के अवसर मंे मुर्गा/मुर्गी, बकरा की बलि दी जाती है तथा मदिरा (शराब) चढ़ाया जाता है।

15 डोमन बाई:- इनकी पूजा अर्चना के समय मुर्गा/मुर्गी, बकरे की बलि दी जाती है, इनके नाराज होने से जनधन की हानि होती है।

16 रिसई माता:- इनका निवास स्थान रिसगांव(बारह गांवों का कुंज) होता है इनकी पूजा कुंवार नवरात्रि में होती है, इनके पूजा के अवसर मंे मुर्गा/मुर्गी, बकरा की बलि दी जाती है, रिसाई माता की पूजा में ज्योत प्रज्जवलित किया जाता है, श्रृंगार हेतु लालवस्त्र, चूड़ी,व सिंदूर का प्रयोग किया जाना, मन्नत मांगी जाती है।

17 धारनी माता:- इनका निवास स्थान फसलों के बीच में होता है कृषि कार्य प्रारंभ करने से पहले और बाद में इनकी पूजा की जाती है, इसे अन्नपूर्णा देवी कहा जाता है, खेत के मेड़ों में अच्छी फसल की प्राप्ति के लिए इनकी पूजा की जाती है।

जनजातियों के त्यौहार

जैसा कि हम सब जानते है कि असली भारत गांवों में ही निवास करता है और अगर हम बात जनजातिय समाज की करे तो वह जंगलों या गांवांे में ही निवासरत् है। जनजीवन की आधारशिला उनकी परंपराएं होती है। प्रत्येक समाज एवं संस्कृति का निगमन भी वहीं से होता है। इसी प्रकार जनजातिय समाज की भी अपनी एक विशेष अनुशासन एवं क्रियाकलाप होती है। ये आदिवासी प्राकृतिक पूजक होते है। प्रकृति ही उनका परिवेश है, उनका आलंबन है और उद्दीपन भी है। वे प्रकृति से सिर्फ अन्न एवं औषधियां ही ग्रहण नहीं करते, अपितु विभिन्न प्रकार के त्यौहार भी लेते है। इन त्यौहारों में विभिन्न प्रकार के गीत, नृत्य, साज-सज्जा, मनोरंजन इत्यादि का समावेंश होता है। इन त्यौहारों के माध्यम से कहीं न कहीं प्रकृति द्वारा ही जुड़े होते है। छत्तीसगढ़ अंचल में इस संदर्भ में कहां जाये ंतो जनजातिय बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण जनजातिय गांवों में ही निवासरत है। ये प्राकृतिक धरोहर को अपनी गोद में संजाये हुए है, जो अपने विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश के लिए जाने जाते है। इन जनजाति समाजों में त्यौहार का भी अपना अलग ही महत्व है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में त्यौहार के माध्यम से ही हर्ष उल्लास का समय आता है। उत्सव या त्यौहार की प्रकृति अधिकांशतः धार्मिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक होती है। इन त्यौहारों के द्वारा मानव शरीर के मन व संपूर्ण जीवन में नवीन चेतना तथा स्फूर्ति का संचार होता है। छ.ग. के त्यौहार बहुरंगी परिधान की भांति है, यहां कोई बैल की पूजा कर त्यौहार मनाता है तो कोई मेले का आयोजन तथा ग्राम देवता की स्थापना करता है। **(Singh J. , 2014, p. 107)** ने अपने अध्ययन मे बताया कि मुण्डा लोगो के प्रमुख त्यौहारों में खद्दी पर्व या सरहुल पर्व है। इस अवसर पर वे बोगों को बलि चढ़ाते है, और नृत्य करते हैं। कार्तिक में पशुओ से संबंधित त्यौहार सोहराई मनाते है। इस समय पर मुण्डाओं द्वारा अपने पूर्वजों की आत्माा की पूजा की जाती है। **(Chaurasia, 2004, pp. 41-42)** ने अपने अध्ययन में बताया कि बैगा जनजाति के मुख्य त्यौहारों मे बिदरी पूजा जो कि बैगाओं के बीज-बोने के पूर्व का त्यौहार है, हरियाली अमावस्या त्यौहार सावन की मरती अमावस्या को मनाया जाता है इसे हरेली त्यौहार भी कहते है। नवाखाई त्यौहार फसल की कटाई का पर्व है। बैगाओं की ऐसी मान्यता है कि जो कुछ भी फसल आई है, उसे पहले पितरों को खिलाना चाहिए। नवाखाई पितरों की तृप्ति और नई फसल के भोग का त्यौहार है। **(Rathore, 1994, pp. 38-41)** ने अपने अध्ययन में बताया कि भीलों के प्रमुख त्यौहारों एवं उत्सवों में दीपावली, होली, विजयदशमी, इन्दल पूजा, गोपालदेव पूजा, ग्रामदेव पूजा, नवाई, अक्षय तृतीया (आरवा तीज), भगोरिया इत्यादि प्रमुख है, जिसे ये मनाते है। अध्ययनगत भुंजिया जनजाति में अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि इनका कोई लिखित पंचाग नहीं होता है। इनमें त्यौहारों की तिथि का निर्धारण आपसी सहमति से बड़े-बजुर्गो की रायसुमारी के पश्चात् किया जाता है। अध्ययन में भुंजिया जनजाति के प्रमुख त्यौहार, उन्हें मनाने की तिथि, प्रमुख पूजनीय देवता, त्यौहार में पूजा हेतु प्रयुक्त वस्तुएं, बलि प्रथा में प्रयुक्त जानवर, त्यौहार विशेष मान्यता, त्यौहार में आमंत्रित व्यक्ति इत्यादि के बारे में बताया गया है।

भुंजिया जनजाति प्रमुख त्यौहार

1 रोटी खानी चांवर धोनी:- अघ्घन माह में छेरछेरा त्यौहार के पश्चात् डूमर देवता की पूजा की जाती है चांवल(कुटा हुआ), नारियल, बेलपत्र सामर्थ के अनुसार मुर्गा-मुर्गी, बकरे यह त्यौहार फसल कटाई के पश्चात् मनाया जाता है जिसे नयी फसल आगमन की खुशी में मनाया जाता है बलि के जानवर के सर को देवता घर में चढ़ाया जाता है इस त्यौहार मे दूध-पानी से धोकर देवता को चढ़ावा चढ़ाया जाता है जिसे बेल पत्ती में रखा जाता है त्यौहार में अपने जाति के अतिरिक्त गांव में रहने वाले अन्य जाति के लोगों को भी निमंत्रण दिया जाता है अतिथि के चरण धोकर नारियल देकर आदर सत्कार किया जाता है, साथ ही अपनी विवाहित बेटियों तथा बहनांे को भी आमंत्रित किया जाता है।

2 छेरछेरा:- पौस माह मे मनाया जाता है यह त्यौहार फसलों की कटाई तथा भडारण के पश्चात् मानाया जाता है जिसमें बच्चंे व बड़े दोनो अपने -अपने घरों से एक-एक टोकरी लेकर ग्राम के प्रत्येक घरों में छेरछेरा मांगने जाते है जिसमें वे धान, चांवल, रुपयें इक्ठ्ठा करते है तथा शाम में इन एकत्रित अनाजों को बेचकर संपूर्ण रुपये को एकत्रित कर मंदिरा सेवन तथा अपने उल्लास में खर्च कर उत्सव मानते है।

3 नवाखाई:- यह त्यौहार क्वांर माह में मनाया जाता है इस अवसर मंे देवी-देवताओं की पूजा नारियल, अगरबत्ती, चूड़ा(धान की बालियों से निर्मित) भेलवा की पत्ती इत्यादि से की जाती है, त्यौहार के अवसर पर बकरे की बलि दी जाती है। यह त्यौहार नई फसल की कटाई के समय मनाया जाता ह,ै इस त्यौहार के पश्चात् ही नये अन्न का उपयोग किया जाता है। भुंजियाजन इस त्यौहार के माध्यम से इष्टदेव को अन्न ग्रहण कराने के पश्चात् स्वयं के उपयोग में उस अन्न को लाते है।

4 अक्ती त्यौहार:- बैशाख शुक्ल पक्ष के तृतीया के दिन इस त्यौहार को मनाया जाता है। इस अवसर मंे देवी-देवताओं की पूजा परसा का पत्ता, महूआ, चना, प्याज, आम, इत्यादि से की जाती है। इस त्यौहार में विशेष मान्यता है कि परिवार के बड़ा लड़का अपने साथ पूजा के उपयोग की समस्त सामाग्री ले कर तालाब जाता है, वहां जाकर स्नान करता है और उन्हीं गीले कपड़ो में पूजा करता है और पूजा में चढ़ाये गये सामाग्री को दो हिस्सों में बांट देता है एक हिस्सा घर लेकर आता है जबकि दूसरा हिस्सा वहीं छोड़ देता है।

5 हरेली:- यह त्यौहार सावन के महीने के श्रावणी अमावस्या मंे मनाया जाता है।

6 खड़बोज:- बैगा द्वारा निर्धारित तिथि को त्यौहार मनाया जाता है। ठाकुर देवता की पूजा की जाती है तथा बकरे की बलि दी जाती है। फसल की प्राप्ति के पश्चात् धन्यवाद झापन स्वरुप यह त्यौहार मनाया जाता है।

7 पोरा:- यह त्यौहार भादो माह की अमावस्या को मनाया जाता है, इसमें अनेक देवी-देवताओं का स्मरण किया जाता है जिसमें ठाकुरदेव, कान्हा भैरो, शीतला माता प्रमुख है, इसमे पूजा हेतु धूप, अगरबत्ती का प्रयोग किया जाता है साथ ही आठ मुर्गीयों की बलि दी जाती है, इस त्यौहार को फसल पकने के पश्चात् रक्षा के लिए मनाया जाता है।

8 दीवाली:- कार्तिक अमावस्या को मनाया जाता है ।

9 होली:- फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

अध्ययन में भुंजिया जनजाति में यह भी देखा गया है कि वे विभिन्न प्रकार की जात्राओं में भी अपनी सहभागिता निभाते है तथा उसे भी उसी हर्ष एवं उल्लाास के साथ मनाते है जैसे कि वे अन्य त्यौहारों को मनाते है अतः भुंजिया जनजाति में प्रचलित जात्रा को भी जानना आवश्यक है

भुंजिया जनजाति में प्रमुख प्रचलित जात्रा

1 चेरु जात्रा:- इस जात्रा में मुख्यतः बूढ़ा देव, ठाकुरदेव, माटीदेव की पूजा अर्चना की जाती है तथा बकरे की बलि दी जाती है यह जात्रा संपन्न होने में एक से दो दिन का समय लगता है, ऐसी मान्यता है कि इस जात्रा में शामिल होने वाले व्यक्ति को कभी बीमारी नहीं होती है, इस दिन देव स्थान की साफ-सफाई की जाती है तथा उत्सव मंे बाजे-गाजे का प्रयोग किया जाता है, बैगा के द्वारा पूजा समपन्न किया जाता है तथा पशु की बलि दी जाती है, इस जात्रा में स्त्री, पुरुष तथा बच्चें सभी शामिल होते है।

2 फागुन जात्रा:- इस जात्रा में मुर्गा या बकरे की बलि दी जाती है, जात्रा समपन्न होने में दो दिन लगते है, जात्रा में पहले दिन प्रत्येक घर से एक व्यक्ति के द्वारा उपवास रखा जाता है, शाम मे घरों मंे दिया जलाया जाता है, बलि के जानवर के मांस को लाल बंगला (कीचन) के सामने पकाकर परिवार के सभी लोग खाते है, परिवार के सभी सदस्य शामिल होते है, इसके अतिरिक्त मेहमानों को भी आमंत्रित किया जाता है।

3 चैत्ररई जात्रा:- यह जात्रा चैत्र माह मे मनाया जाता है, इसमें ठाकुर देवता की पूजा की जाती है तथा बकरे की बलि दी जाती है, बलि के जानवर के मांस को सिफ्र पुरुष वर्ग के द्वारा ही खाया जाता है वे इस मांस को घर नहीं लाते है वही जात्रा स्थान में ही पकाकर खाया जाता है महिलाओं को इस मांस को नहीं दिया जाता है।

4 दशहरा जात्रा:- यह जात्रा दशहरे के समय मनाया जाता है जिसमें प्रत्येक गांव से एक-एक बकरे की बलि दी जाती है। इस जात्रा में भुंजिया समाज के राजा के द्वारा जो कि कोदोपाली ग्राम में निवासरत् है, के द्वारा गोड़ समाज के राजा को आमंत्रित किया जाता है तथा इनके द्वारा ही जानवरों की बलि होती है, प्रत्येक बलि के जानवर के मांस को

उस गांव के लोगों में बांट दिया जाता है तथा कोदोपाली मे प्रत्येक ग्राम से एक वृद्ध व्यक्ति को न्योता दिया जाता है और बलि के जानवर के सिर को उन्हीं वृद्धों को खिलाया जाता है।

5 ठुठी मौली जात्रा:- इस अवसर पर मुर्गा-मुर्गी, बकरे की बलि दी जाती है। गांव के बाहर जहां देवी निवास स्थान होता है, वहां पर सभी लोग सुबह सात बजे एकत्रित होते है और पूजा अर्चना की जाती है और बलि के जानवर के मांस को नदी-नाले के पास ले जाकर पकाकर खाया जाता है।

निष्कर्ष:-

अध्ययनगत भुंजिया जनजाति के प्रमुख देवी-देवता तथा त्यौहारों का समाजशास्त्रीय अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आज वर्तमान में भी इस विशेष जनजाति के द्वारा अपने प्रमुख देवी-देवता उनके पूजा-अर्चना की पद्धति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है तथा साथ ही वे अपने प्रमुख त्यौहारों को आज भी उसी हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाते आ रहे है जैसा वे पहले मनाते थे जो इस बात का प्रमाण है कि ये आदिवासी समय परिवर्तन होने का कोई भी प्रभाव अपने इन देवी-देवता तथा उनके त्यौहारों पर पड़ने नही देते है।

References

Alvin, V. (1955). The Religion of an Indian Tribls . Sanwara London: Oxford University.

Chaurasia, V. (2004). Prakriti Putra Baiga. Bhopal: M.P. Granth Acedamy.

Dubey, S. (1990). An Indian Village. New Delhi: National Book Trust of India.

Ghurye, G. S. (1963). The Scheduled Tribes. Bombay: Popular Prakashan.

Guha, M. (1993). Kamar Janjati Ke Manavsastriya Aadyan. Raipur.

Hoebel, E. A. (1949). Man In The Primitive World . Newyork: McGraw Hill Book Company.

Majumdar, D. N. (1961). Tribes In Transition. Longmans Green & Co. Ltd.

Rathore, A. S. (1994). Bhil Janjati Siksha Aur Aadhunikikaran . Jaipur: Panchsheel Prakasan.

Singh, C. (2009). Aadivasi Samajik JIvan Ka Badalta Swaroop. . Jaunpur: Unpublished Thesis Veer Bahadur Singh Puwanchal University.

Singh, J. (2014). Aadivasi Dalit Sanskriti . Delhi: Hari Books Prakasak.

Tiwari, V. K. (2001). Chhattishgarh Ki Janjatiya . New Delhi: Himalaya Publising House.